वार्तालाप सीडी नं. 348, जम्मू, दिनांक 30.06.07
Disc.CD No. 348, Dt. 30.06.07 at Jammu

समयः 0.05–6.42
जिज्ञासुः बाबा मुसलमानों में दिन में पांच बार नमाज़ पढ़ने की कवायद है। ये सैम्पलिंग संगमयुग पर कैसे लग रही है?
बाबाः कोई देहधारी धर्मगुरु हुए होंगे जिन्होंने डायरेक्शन रिले किया होगा। बाबा ने कहा श्वासों श्वास याद करना है। क्या? श्वासों श्वास याद करना है। उन्होंने डायरेक्शन निकाला दिन में कम से कम पांच बार याद करना है। ये डायरेक्शन कौनसे धर्म की आत्मा ने निकाला होगा? जो इस्लाम धर्म में कन्वर्ट होने वाली होगी उसी ने निकाला होगा।

Time: 0.05-6.42
Student: Baba, there is a rule of reading *namaz* five times a day among the Muslims. How is this sampling (i.e. sapling) being planted in the Confluence Age?
Baba: There must have been some bodily religious gurus, who must have relayed the direction. Baba said, "We have to remember in every breath." What? We have to remember in every breath. They issued the direction that we should remember at least five times a day. The soul from which religion must have issued this direction? Only the soul, who will convert into Islam religion, must have issued this direction.

जैसे मम्मा ने शरीर छोड़ा तो ब्रह्मा बाबा ने उनका शरीर जो है मम्मा का वो नक्की लेक के किनारे जाकर के दाह संस्कार कराया। ये भारत की परम्परा हुई या विदेश की परम्परा हुई? भारतीय परम्परा है क्योंकि भारत के जो लोग है भारतवासी, पक्के–पक्के सूर्यवंशी वो इसी जन्म में अपना देह का भान राख कर देते है, जला भुना के। अगले जन्म में उनका देहभान जाने वाला नहीं है। पक्की आत्मा बन जाते है। देहभान सारा स्वाहा हो जाता है। उसकी यादगार में हिन्दुओं में आज भी देह को जलाते है।

For example, when Mamma left her body, Brahma Baba took the (dead) body of Mamma to the banks of Nakki lake and performed the ceremony of cremation there. Is this a tradition of India or is it a foreign tradition? It is an Indian tradition because, the Indians, the firm *suryavanshis* burn their body consciousness to ashes in this birth itself, by burning and roasting. Their body consciousness is not going to be carried to the next birth. They become firm souls. Their entire body consciousness is consumed. In its memorial (dead) bodies are burnt till date among Hindus.

वो भक्तिमार्ग वाले देह को जलाते है। है वास्तव में किसको जलाने की बात? देहभान को जलाने की बात है। और दूसरे धर्म वाले? दूसरे धर्म वाले देह को जलाते नहीं है, देहभान को जलाते नहीं है, उनमें कुछ न कुछ देहभान रह जाता है। कुछ न कुछ देहभान रूपी मिटट्ी रह जाती है जिसमें दब के खत्म हो जाते है। उनके जन्म इसलिये कम हो जाते है। पक्की आत्मा नहीं बन पाते, 84 जनम नहीं ले पाते। इसलिये दूसरे धर्मो में ये प्रथा प्रचलित है कि वो जलायेंगे नहीं। कुछ न कुछ देहभान बना रहे इसलिये मिटट्ी में, देह अभिमान की मिटट्ी में दबा देंगे।

Those people of the path of worship burn bodies. Actually it is a topic of burning what? It is a topic of burning the body consciousness. And what about the people of the other religions? People of the other religions do not burn the body; they do not burn the body consciousness; body consciousness remains in them to some extent. The soil-like body consciousness remains to some extent in which they bury and finish off. That is why their births become less. They are unable to become firm souls. They are unable to take 84 births. That is why this tradition is famous among the other religions. What? It is that they will not burn (the dead body). The body

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

consciousness should remain to some extent; that is why they will bury in the soil, in the soil of body consciousness.

ब्राह्मणों की दुनिया में भी ये शूटिंग किसी ने चालू की। मम्मा को तो अग्नि में दाह संस्कार किया गया। और नक्की लेक में ले जाके किया। माना जहाँ ज्ञान जल का आगार हो या ज्ञान जल की नदी बहती हो या सागर का कंठा हो वहाँ जा करके दाह संस्कार करते है। मुसलमान क्या करते है? है? (किसी ने कुछ कहा) हाँ कब्र में दफना देते है। यादगार, मोन्यूमेंट (monument) बना देंगे। ब्रह्मा बाबा का भी किसी जलाशय के किनारे ले जाके नहीं दफनाया गया। वहीं प्रांगण में, आंगन में ही उनका क्रियाकर्म किया और मान्यूमेंट खड़ा किया। क्या नाम दिया उसको? शांति स्तम्भ। तो ये कबर बनाने की प्रथा भी इसका फाउन्डेशन कहाँ पड़ता है? ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में पड़ता है।

Someone started this shooting in the world of Brahmins as well. Mamma was cremated (burnt). And she was cremated by taking (the dead body) to the Nakki lake. It means that the cremation is performed by going to the place where there was the storehouse of water of knowledge or the place where the river of water of knowledge flows or to the sea coast. What do the Muslims do? (Someone said something). Yes, they bury in a grave. They will build a memorial, monument. Even (the dead body of) Brahma Baba was not taken to banks of any water body and buried. His ceremony of cremation was performed in the same premises, i.e. courtyard and a monument was erected. What was it named as? *Shaanti stambh* (tower of peace). So, where is the foundation of this tradition of making graves laid as well? It is laid in the Confluence-age world of Brahmins.

मुसलमानों ने भारत में आ करके भारत के शास्त्रों को भाड़ में भून दिया। फाड़–फाड़ करके जमीन में गाड़ दिया। नदी में फेंक दिया। यहाँ भी ये शूटिंग होती है। कोई भी धर्म वाले अपने धर्म पिता की वाणी का बहुत कदर करते है। लेकन भारतवर्ष में? शास्त्रों की बहुत कदर करते है। समझते है भगवान के मुख से ये वाणी निकली। वेदवाणी कहा जाता है। लेकिन ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में बाबा के मुख से निकली हुई वाणी का कदर नहीं हुआ। सारी वाणियाँ, पाँच साल की वाणियाँ ही उपलब्ध हो रही है। जबकि मुरली निकलती चली आई है कराची से। कराची से लेकर के अडसठ तक की मुरलियाँ सारी गायब हो गई। फाड़–फाड़ करके फेंक दिया। जैसे भगवान की वाणी की कोई वैल्यू ही नहीं, उसपे विचार करने की जरूरत ही नहीं। जो साधारण मनुष्य होते हैं उनकी वाणी पर लोग विचार करते है इसका गुह्यार्थ क्या है? क्यों बोला? इसका रिजल्ट क्या होना चाहिये?

Muslims came to India and burnt the scriptures of India in the furnace. They tore them and buried them in the earth. They threw them in the rivers. Its shooting takes place here as well. People belonging to any religion give a lot of respect to the versions of their religious father. But what is it in India? They give a lot of respect to the scriptures. They think that these versions have emerged through the mouth of God. It is called *Vedvani*. But in the Confluence-aged world of Brahmins the versions that have emerged through the mouth of Baba were not given respect. All the vanis……. only the vanis of five years are available; whereas Murlis are being narrated ever since (the days of) Karachi. All the Murlis that were narrated from Karachi to 1968 have vanished. They torn and threw it away. It is as if there is no value of Godly versions, there is no need to think over it at all. People think upon the versions of the ordinary human beings, that what is its deep meaning? Why was spoken? What should be its result?

तो शूटिंग होती है हर बात की यहाँ। ये पाँच बार नमाज पढ़ने की शूटिंग भी यहाँ होती है। और जब नमाज पढ़ते हैं तो कानों में उंगली देने की भी शूटिंग यहाँ होती है। कैसे? (किसी ने कुछ कहा) किसी की बात मत सुनो। कान में उंगली दे दो। शिवबाबा को याद करो। अल्लाह हो अकबर।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

So, the shooting of everything takes place here. The shooting of reading *namaaz* five times (a day) also takes place here. And the shooting of putting fingers in the ears while reading *namaaz* takes place here as well. How? (Someone said something) (They say that) "Do not listen to anyone. Put your fingers in your ears. Remember Shivbaba. Allah-O-Akbar."

समय–6.42–7.45
जिज्ञासु– बाबा द्वापर कलियुग में भी ऐसी आत्मायें हुई है, जो प्यूरिटी को धारण करती रही है। जैसे ये इस्लामियों में या मुसलमानों में, क्रिश्चियन्स में, क्या बोलते है हीर–रांझा, लैला–मजनू।
बाबा– ये हीर–रांझा की कहानी की कोई हिस्ट्री नहीं है। ये संगमयुगी यादगार है। हां। पहाड़ को काट करके नदी निकाली। ये संगमयुग की बातें है। पहाड़ जैसे खड़े हुये विघ्न को खत्म करना और फिर ज्ञान की नदी पार करके बाहर लाना। संसार के सामने जिसको शास्त्रों में लिख दिया है ज्ञान की गंगा लाये। भागीरथ का काम हुआ। उसको हिन्दुओं में भागीरथ नाम दे दिया है। मुसलमानों की कथा में उसको हीर और रांझा नाम दे दिया है।

Time: 6.42-7.45
Student: Baba, there have been such souls even in the Copper Age and the Iron Age who have been imbibing purity. For example, Heer & Ranjha, Laila & Majnoo are mentioned by Islamic people, Muslims, Christians too.
Baba: There is no history of the story of Heer-Ranjha. This is a memorial of the Confluence Age. Yes, he cut the mountain to make a way for the river. These are the topics of the Confluence Age. To destroy the obstacles that are standing (in the path) like mountains and then to bring the river of knowledge flow out of it in front of the world, for which it has been written in the scriptures that he brought the Ganges of knowledge. It was the work done by Bhagirath. He has been named as Bhagirath by the Hindus. In the stories of Muslims it has been named as 'Heer and Ranjha'.

समय–7.50–9.40
जिज्ञासु– बाबा जब सम्पूर्ण विनाश होगा तो सभी 5–7 सौ करोड़ आत्मायें जायेंगी तो पशु पक्षियों की आत्मायें भी चली जायेंगी?
बाबा–वो रह जायेंगी क्या? मनुष्य इतने उपक्रम कर लेता है। अंडरग्राउंड़ बना लेता है। एटम बमों का विस्फोट होता है भूकम्प आते है अंडरग्राउंड़ में चला जाता है। अपने को सुरक्षित करने का प्रयत्न करता है। जीव जंतु तो कुछ भी प्रयत्न..... वो कैसे बचेंगे? उनके बचने का कोई तरीका है क्या? वो भी जायेंगे। और जीव जंतु तो सब मनुष्य की सुरक्षा के लिये और मनुष्यों के लिए मनोरंजन पैदा करने के लिए है। और जीव जंतु जो है वो उनमें मन नहीं है उनमें बुद्धि नहीं है उतनी। मनुष्य तो बौद्धिक प्राणी है। मननशील, चिंतनशील प्राणी है। तो मनुष्यों के लिये सारी दुनिया है। और सारी दुनिया मनुष्यों के आधार पर टिकी हुई है। मनुष्य जब परिवर्तन होते है तो सारी दुनिया परिवर्तित हो जाती है। मनुष्य वायब्रेशन बनाते है तो सारी दुनिया का वायब्रेशन सुधर जाता है। जानवर वायब्रेशन बनायेंगे क्या? जानवरों को मन होता है क्या? वो मन को कंट्रोल करेंगे क्या?

Time: 7.50-9.40
Student: Baba, when the complete destruction takes place and all the 5-7 billion (human) souls will depart, then will the souls of the animals and the birds go as well?
Baba: Will they remain? A human being makes so many arrangements. He builds underground. When atom bomb explosions take place, earthquakes occur, he goes underground. He tries to safeguard himself. The living creatures (don't make) any efforts; how will they be saved? Is there any way for them to be saved? They will go as well. Other living beings are for the safety of human beings and are for creating entertainment for the human beings. Other living beings that are there, they do not have mind, they don't have intellect to that extent. Human being is an

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

intellectual being. He is a being who thinks and churns. So, the entire world is for the human beings. And the entire world is fixed on the basis of human beings. The entire world changes when the human beings change. When the human beings create vibrations, the vibrations of the entire world improve. Will the animals create vibrations? Do the animals have a mind? Will they control the mind?

समय–9.32–9.40
जिज्ञासु– बाबा ब्रह्मा बाबा को जनम देनेवाले जगदम्बा और जगतपिता है लेकिन उनकी बुद्धि में ये बात आई नहीं कि ये मेरे माँ–बाप है।
बाबा– ब्रह्मा बाबा की बुद्धि में ये बात नहीं आई। तो बच्चा बुद्धि किसे कहा जाये। बच्चा ये जानता है छोटा बच्चा जब जन्म लेता है तो छोटा बच्चा जानता है मेरे माँ–बाप कौन है? माँ को फिर भी भले पहचान ले लेकिन बाप को, बाप को नहीं पहचानता। इसलिये माँ तो फिर भी यज्ञ में रही। जगदम्बा माता यज्ञ में ब्रह्मा बाबा के साथ रही लेकिन बाप की पहचान ब्रह्मा को नहीं हुई। इसलिये जो संस्था बनाई, सन 1947 में उसका नाम क्या रख दिया? माउंट आबू में आके उसका नाम रख दिया ब्र.कु.ई.वि.वि.। प्रजापिता भी होना चाहिये ये उनकी बुद्धि में नहीं आया। उसका प्रूफ (किसी ने कुछ कहा) हाँ, उसका प्रूफ है कि शुरूआत से ही ब्रह्माकुमारी विद्यालय लिट्रेचर में छपे हुये। कहीं भी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी विद्यालय नहीं छपा हुआ है। अभी भी वो अपने नाम के आगे प्रजापिता नहीं लिखते हैं।

Time: 9.40
Student: Baba, Jagdamba and Jagatpita are the ones to give birth to Brahma Baba, but it did not fit into his intellect that they are my parents.
Baba: This topic did not fit into the intellect of Brahma Baba. So, who will be said to have a child-like intellect? Does a child a small child know; when he is born, does a small child know that who are my parents? Even so, he may recognize his mother, but he does not recognize the father. Therefore, the mother remained in the yagya even then. Mother Jagdamba remained with Brahma Baba in the yagya, but Brahma did not have the realization of the Father. That is why what was the name assigned to the institution that was established in 1947? After coming to Mt.Abu it was named as Brahma Kumari Ishwariya Vishwa Vidyalaya (BKIVV). It did not come to his intellect that the word 'Prajapita' should be included in it too. Its proof; (Someone said something) yes, its proof is that from the beginning itself the name Brahmakumari Vidyalay have been printed in the literature. The name Prajapita Brahmakumari Vidyalay has not been published anywhere. Even now they do not add the prefix Prajapita to their names.

समय–11.01–11.05
जिज्ञासु– बाबा द्वापरयुग से पहले की हिस्ट्री नहीं मिलती है। और द्वापरयुग के आदि में अर्ध विनाश होगा उसमें द्वापरयुग की आठ दस करोड़ आत्मायें बचेंगी। वह कैसे बचेंगी? और।

Time:
Student: Baba, the pre-Copper Age history is not available. And semi-destruction will take place in the beginning of the Copper Age, 80 million to 100 million souls of the Copper Age will survive in it. How will they survive? And.

बाबा– एक–एक बात पूछो।
जिज्ञासु– यहीं इसी में है ना बाबा।
बाबा– जो भी बात पूछे एक बात पूछिये इकट्ठी नहीं। हां।
जिज्ञासु– द्वापरयुग से पहले की हिस्ट्री नहीं मिलती है।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा – द्वापरयुग से पहले की हिस्ट्री नहीं है मनुष्यों के पास क्योंकि द्वैतवादी युग था ही नहीं। दो–दो बातें थी ही नहीं। एक ही सच्चाई थी। अद्वैत युग था। क्या? दूसरा कुछ था ही नहीं। कोई प्रकार का झगड़ा था ही नहीं। तो हिस्ट्री किस बात की लिखे?

Baba: Ask one by one.
Student: It is included in this question itself Baba.
Baba: Whatever you ask, ask one at a time, not together. Yes.
Student: The history of the period before the Copper Age is not available.
Baba: Human beings do not have the pre-Copper Age history because it was not a dualistic Age at all. Two subjects did not exist at all. There was only one truth. It was a monistic Age. What? Nothing else existed. There was no dispute at all. So, history of what has to be written?

जिज्ञासु– और द्वापरयुग की आदि में अर्ध विनाश होगा।
बाबा– होता है।
जिज्ञासु– होता है। उसमें द्वापरयुग की आठ–दस करोड़ आत्मायें बचेंगी। वह कैसे बचेंगी?
बाबा– आधा करोड़ आत्मायें बचेंगी?
सबने कहा– आठ–दस करोड़।
बाबा– आठ–दस करोड़ आत्मायें बचती है। कैसे बचेंगी? आठ–दस करोड़ आत्मायें बचेंगी नहीं। विनाश होने से पहले, अर्ध विनाश होने से पहले आठ–दस करोड़ की दुनिया की आबादी होती है। दुनिया माना भारतवर्ष की। बचेंगी नहीं इतनी?
जिज्ञासु– नहीं, ...तो अर्ध विनाश होगा।

Student: And semi-destruction will take place in the beginning of the Copper Age.
Baba: It takes place.
Student: It takes place. 80 million to 100 million souls of the Copper Age will survive in it. How will they survive?
Baba: Will half a crore (5 million) souls survive?
Everyone said: Eight to ten crore (80 million to 100 million).
Baba: Eight to ten crore (80 million to 100 million) souls survive. How will they survive? Eight to ten crore (80 million to 100 million) souls will not survive. Before the destruction, before the semi-destrution, the population of the world is eight to ten crores (80 million to 100 million). The world means of the Indian region. This many will not survive.
Student: No….semi destruction will take place.

बाबा– अर्ध विनाश होगा उस समय...
जिज्ञासु– कैसे?
बाबा– विनाश होने से.....कैसे! भूकम्प आते है।
जिज्ञासु– तब वो कैसे बचेंगे?
बाबा– वो इसी तरह बचेंगे जैसे अभी भूकम्प आते है, जैसे भुज में भूकम्प आया तो सब मर गये क्या? कुछ बचे ना। ऐसे ही वो अर्ध विनाश तो अभी के जितने भूकम्प आये है हिस्ट्री में उनके मुकाबले तो बहुत भयंकर था। तो कुछ ना कुछ थोड़े बहुत बचते है। ऐसे नहीं सब खलास हो जाते है।
जिज्ञासु– और उनको?

Baba: At the time when semi-destruction will take place…….
Student: How?
Baba: Due to destruction……How! Earthquakes occur.
Student: How will they survive then?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: They will survive in in the same way as earthquakes happen now, just as an earthquake occurred in Bhuj, did everyone die? Some survived, did they not? Similarly, that semi-destruction was very severe as compared to all the earthquakes that has occurred so far in the history. So, some do survive. It is not as if everyone perishes.

बाबा– जैसे अभी सम्पूर्ण विनाश होगा तो 500 करोड़ मनुष्य शरीर सब खलास हो जावेंगे क्या? हैं? सब खलास हो जावेंगे? नहीं खलास हो जावेंगे। कुछ न कुछ बीज जरूर बचेंगे। (किसी ने कुछ कहा) हाँ तो ऐसे ही वहाँ भी त्रेता के अंत में जो अर्ध विनाश होता है उसमें और–और धरम के जो भी बीज है, जो सृष्टि के आदि में भी थे वो बीज जरूर बचेंगे।
जिज्ञासु– तभी तो नये धर्म स्थापन होते हैं।
बाबा– बीज का कभी विनाश नहीं होता।

Baba: For example, when complete destruction takes place now, will the bodies of all the 5 billion human beings perish? Hm? Will everyone perish? They will not perish. Some seeds will definitely survive. (Someone said something). Yes, similarly, there, at the end of the Silver Age the semi-destruction that takes place, the seeds of other religions, the seeds that existed even in the beginning of the world will certainly survive.
Student: Only then the new religions are established.
Baba: A seed is never destroyed.

जिज्ञासु– और जो बचेंगे उनको सतयुग त्रेता की स्मृति कैसे भूलेगी? जो बचेंगे आठ दस करोड़.....
बाबा– आठ दस करोड़ तो अर्ध विनाश से पहले की बात है।
जिज्ञासु– उनको सतयुग और त्रेता की स्मृति कैसे भूलेगी?
बाबा– उनको कोई स्मृति नहीं रहती है। जैसे किसी आदमी को भयंकर एक्सीडेंट हो जाता है। तो उस एक्सीडेंट के बाद उसे स्मृति सब गायब हो जाती है। ऐसे वो अर्ध विनाश भी इतना भयंकर होता है कि सतयुग त्रेता की सारी स्मृति गायब हो जाती है।

Student: And how will those who survive forget the memories of the Golden Age and the Silver Age? The eight to ten crores (80 million to 100 million) who will survive…….
Baba: Eight to ten crores (80 million to 100 million) is before the semi-destruction.
Student: How will they forget the memories of the Golden Age and the Silver Age?
Baba: They do not remember anything. Just as when a person meets a dangerous accident, then after the accident, he forgets everything. Similarly, that semi-destruction is so horrible that the memories of the Golden Age and the Silver Age vanishes completely.

समय–14.40–14.42
जिज्ञासु– बाबा ये महाभारत में शिखंडी का पार्ट बताया है जो, इस समय शिखंडी कौन है?
बाबा– इस समय शिखंडी? शिखा अंडी। क्या? कोई चोटी के ब्राम्हण ही होंगे। कैसे ब्राह्मण होंगे? चोटी के ब्राह्मण होंगे। लेकिन अंडी बच्चे होंगे। क्या? होंगे चोटी के ब्राह्मण लेकिन जो चोटी के ब्राह्मण हैं उन के अंडी बच्चे है। वो सूर्यवंशी होंगे या चंद्रवंशी होंगे? है? अंडी बच्चे होंगे माना बीज तो होंगे। बीज तो होंगे, लेकिन रचयिता नहीं होंगे। क्या होंगे? रचना होंगे। माना रूद्रमाला में भी कोई ऐसे है सूर्यवंशी चंद्रवंशी जिनमें सूर्यवंशी है रचयिता।

Time: 14.42
Student: Baba, the part of Shikhandi which has been mentioned in the Mahabharata; who is Shikhandi at present?
Baba: Shikhandi at present? *Shikha, andi*. What? They must be some topmost Brahmins. What kind of Brahmins will they be? They will be topmost Brahmins. But they will be *andi* (egg/seed-

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

like) children. What? They will be definitely topmost Brahmins, but they are the children of the topmost Brahmins. Will they be *Suryavanshi* (of the Sun dynasty) or *Chandravanshi (of the Moon dynasty)*? Hm? They will be *andi* children, i.e. they will be seeds. They will definitely be seeds, but they will not be the creators. What will they be? They will be the creations. It means that even in the *Rudramala (the rosary of Rudra)*, there are some *suryavanshis* and *chandravanshis*. Among them *suryavanshis* are the creators.

और रूद्रमाला में जो चंद्रवंशी हैं वो ऐसे अंडी बच्चे हैं जो भाव स्वभाव से कुछ समय पुरुष का पार्ट बजाते हैं और कुछ समय स्त्री का पार्ट बजाते हैं। जैसे रुद्रमाला में जगदम्बा है – चोला, स्त्री चोला है। लेकिन रुद्रमाला के बच्चों को लक्ष्य क्या मिला हुआ है? नर से नारायण बनना है। और नारी से लक्ष्मी बनना है। तो रुद्रमाला के जो भी मणके हैं वो पुरुष स्वभाव के हैं या स्त्री स्वभाव के हैं? वो स्वभाव संस्कार से तो जगदम्बा भी क्या होगी? पुरुष स्वभाव की है। वो किसी से कंट्रोल्ड होने वाली नहीं है। राज करेगा खालसा। कंट्रोल करेगी। किसी से कंट्रोल्ड होने वाली (नहीं है)। तो पुरुष वृत्ति के संस्कार हुए या स्त्री वृत्ति के संस्कार हुए? पुरुष वृत्ति के संस्कार। लेकिन चोला? चोला स्त्री का है। तो लास्ट जो टाइम होगा, कंचन काया बनने का, उसमें स्त्री रूप ही रहेगा या पुरुष रूप हो जायेगा? हारमोन्स चेंज होंगे या नहीं होंगे? हारमोन्स चेंज हो जायेंगे। तो आधा समय स्त्री और आधा समय पुरुष। ये महाभारत में एक रूप दिखाया है।

And the *Chandravanshis* among the *Rudramala* are such *andi* children who play a male part for some time and the role of a female for some time through their nature. For example, there is Jagdamba in the Rudramala, the body is that of a female. But what is the aim given to the children of R*udramala*? They have to get transformed from a male to Narayan and from a female to Lakshmi. So, do the beads of the *rudramala* have a masculine nature or a feminine nature? What will even Jagdamba be by the nature and sanskars? She has a masculine nature. She is not going to be controlled by anyone. *Raaj karegaa khaalsaa* (the pure one will rule). She will control. She is not going to be controlled by anyone. So, are these the sanskars of a masculine attitude or a feminine attitude? These are the sanskars of a masculine attitude. But what about the body? The body is of a female. So, in the last time of becoming *kanchankaya* will she have remain in a feminine form or will she be transformed in a masculine form? Will the hormones change or not? The hormones will change. So, half the time female and half the time male. This is a form which has been shown in Mahabharata.

समयः 17.55 – 21.24
जिज्ञासुः बाबा जगदम्बा ने ज्ञान का वजन सबसे ज्यादा उठाया है। तो प्रैक्टिकली ऐसा क्या किया 1983 से जबसे समर्पित हुई है? ज्ञान का वजन ज्यादा उठाया मतलब क्या है?

Time: 17.55-21.24
Student: Baba Jagdamba has carried the weight of knowledge the most, so, practically what did she do since 1983, ever since she has surrendered? What is meant by carrying the weight of knowledge the most?

बाबाः एक होता है ज्ञान को प्रैक्टिकल जीवन में धारण कर लेना। प्रैक्टिकल जीवन में ज्ञान उतार लेना। उससे अपना भी भला और दूसरों का भी भला। और एक होता है ज्ञान का बोझ तो ढोया। जैसे आज के सरस्वती आदि टाइटिल धारण करने वाले वाराणसी के पंडित होते हैं। वो शास्त्रों का ज्ञान तो उठाते हैं, वजन तो ढ़ोते हैं, लेकिन प्रैक्टिकल जीवन में नहीं होता। इसलिए मुरली में बोला है – ''मेरे साथ रहने वाले बच्चे मेरे को नहीं पहचान पाते।'' तो फिर ज्ञान का फायदा क्या हुआ? ज्ञान तो सारा है। ज्ञान का तीया–पैचा करने में, अगर शास्त्रार्थ किया जाये, वाद–विवाद किया जाये, तो कोई बड़े–ते–बड़ी ब्रह्माकुमारी जगदम्बा का मुकाबला नहीं कर पायेगी। लेकिन प्रैक्टिकल जीवन में प्राप्ति? प्राप्ति क्या होती है? प्राप्ति

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

स्थापना के आधार पर होती है या विनाश के आधार पर होती है? जितना स्थापना करेंगे उतनी ही पालना करेंगे।

Baba: One thing is to imbibe the knowledge practically in the life i.e. to bring the knowledge in practical life. It is good for us as well as for the others. And one thing is that (she) carried the weight of knowledge; just as there are pundits (learned people) of Varanasi who assume the titles of Saraswati, etc. As such they obtain the knowledge of the scriptures, they carry the weight, but practical is not visible in their life. That is why it has been said in the Murli, "Even the children who live with me are unable to recognize me." So, then what was the use of knowledge? She has the entire knowledge. In twisting and turning the (points of) knowledge, if the meaning of the scriptures is debated upon, if a debate is organized, then even the senior most Brahmakumari will not be able to face Jagdamba. But what is the attainment in the practical life? What is the attainment? Is the attainment on the basis of establishment or on the basis of destruction? The more one will establishment, the more one will will sustain.

तो प्राप्ति बहुत होती है। जगदम्बा महाकाली का रूप धारण करती है। इसलिए भारतवर्ष में मां को कोई वर्सा परंपरा में नहीं मिलता रहा। इसका फाउन्डेशन कहां पड़ा? यहां ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में फाउन्डेशन पड़ा। मां का बच्चों में इतना जास्ती मोह हो जाता है कि वो अपनी परवाह नहीं करती। अंधा, लूला, लंगड़ा, कोढ़ी, कुब्जा, काना, चोर, डकैत, लुच्चा, लफंगा, जैसा भी बच्चा होगा उसको अपनी गोद से बाहर नहीं करना चाहती। ये मोह जो है वो माताओं को ले डूबता है। इसलिए बोला है माताओं ने अगर मोह के ऊपर विजय प्राप्त कर ली तो समझ लो जगतजीत बन गई। पुरुषार्थ पूरा हो गया।

So, there is a lot of attainment. Jagadamba takes the form of 'Mahakaali.' That is why traditionally a mother does not receive any inheritance in the Indian region. Where was the foundation laid? The foundation was laid here in the Confluence-aged world of Brahmins. The mother develops so much attachment for the children that she does not care for herself. The child may be blind, crippled, lame, leper, hunch- backed, one-eyed, a thief, dacoit, a scoundrel, loafer; but she does not want to separate him from her lap. This attachment causes the mothers to sink. That is why it has been said that if mothers gain victory over the attachment, then it is sure that they have become conquerors of the world. Their efforts have been completed.

जिज्ञासु: क्यों नहीं निकलता (मोह)?
बाबा: देहभान ज्यादा होता है। (किसी ने कुछ कहा) ना, देहभान ज्यादा होता है माताओं में। देह का होना पुरुषों में ज्यादा होता है या माताओं में ज्यादा होता है? कन्याओं माताओं में देह का ज्यादा (बाबा ने एक्टिंग करके दिखाया)। पुरुषों को इतना देहभान..... पुरुष बड़े आराम से सन्यासी बन जाते हैं नंगे हो करके घूमते हैं। स्त्रियां कोई ऐसे कर सकती हैं क्या? नहीं। इसलिए बोला है माता होती है साकारी और बाप होता है निराकारी।

Student: Why does not the attachment remove?
Baba: The body consciousness is more. (Someone said something) No, mothers are more body-conscious. Are the men more conscious of their bodies or are the mothers more conscious of their bodies? The virgins and the mothers are more conscious of their bodies (Baba acted and showed). Men are not conscious of their bodies to that extent. Men become *sanyasis* very easily; they roam naked. Can women do like this? No. That is why it has been said, "Mother is corporeal, while the Father is incorporeal."

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 21.25–23.55
जिज्ञासुः बाबा सीढ़ी के चित्र में कृष्ण की मूर्ति को अकेले क्यों दिखाया गया है?
बाबाः सीढ़ी के चित्र में कृष्ण की मूर्ति को।
जिज्ञासुः अकेले क्यों दिखाया गया?
बाबाः अकेले?
जिज्ञासुः हां, राधा बिना।
बाबाः हां। वो तो पीपल के पत्ते पर दिखाई गई है ना। क्या? जो कृष्ण की मूर्ति है वो पीपल के पत्ते पर दिखाई गई ना। वो कल्प वृक्ष की बात है।

Time: 21.25-23.55
Student: Baba why has the idol of Krishna been shown alone in the picture of the ladder?
Baba: Krishna's idol in the picture of the ladder…
Student: Why has he been shown to be alone?
Baba: Alone?
Student: Yes, without Radha.
Baba: Yes, it has been shown on a peepal leaf, isn't it? What? The idol of Krishna has been shown on a Peepal leaf, isn't it? It is a topic of Kalpa Vriksha.

जिज्ञासुः माताजी पूछ रही है कि सीढी के चित्र में।
बाबाः सीढी के चित्र में क्या?
जिज्ञासुः पहले लक्ष्मी–नारायण की मूर्ति दिखाते हैं बाद में ये कृष्ण की मूर्ति दिखाते हैं सिंगल कृष्ण।
दूसरा जिज्ञासुः उसको क्यों दिखाया?
तीसरा जिज्ञासुः द्वापरयुग से जो भक्ति चालू होती है ना।
बाबाः हां।
जिज्ञासुः उसमें पहले लक्ष्मी–नारायण का चित्र दिखाते हैं।
बाबाः हां, लक्ष्मी नारायण की पूजा होती है।

Student: Mataji is asking that in the picture of the ladder…
Baba: What in the picture of the ladder?
Student: First the idols of Lakshmi and Narayan are shown and later on this idol of Krishna is shown, the single Krishna.
Second student: Why has it been shown (to be single)?
Third student: The *bhakti* that begins from the Copper Age.
Baba: Yes.
Student: In that first the picture of Lakshmi-Narayan is shown.
Baba: Yes, Lakshmi and Narayan are worshipped.

तीसरा जिज्ञासुः नीचे कृष्ण की पूजा होती है, सिंगल कृष्ण की। तो उन्होने पूछा है सिंगल कृष्ण की पूजा क्यों होती है?
बाबाः सिंगल कृष्ण की पूजा इसलिए होती है कि यहां शूटिंग हो जाती है। पहले मम्मा–बाबा दोनों के चित्र लगाते थे। धीरे से कोई सौतिया डाह वाली ने वो मम्मा का चित्र हटाय दिया और ब्रह्मा बाबा का चित्र लगा रहने दिया। ऊपर शिव ज्योति बिन्दु, नीचे ब्रह्मा बाबा और बाकी सब ब्राह्मण बैठे हुए हैं। तो जैसी शूटिंग होगी वैसा ही तो बड़े ड्रामा में होगा।

Student: Below (the picture of Lakshmi-Narayan) Krishna, single Krishna is worshipped. So, she has asked as to why single Krishna is worshipped?
Baba: Single Krishna is worshipped because the shooting takes place here. Initially the pictures of Mamma as well as Baba used to be displayed. Slowly someone with the jealousy of a co-wife

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

removed the picture of Mamma and allowed the picture of Brahma Baba to remain. Shiv-the point of light at the top, below that Brahma Baba and all the other Brahmins are sitting. So, as the shooting takes place, so will happen in the broad drama.

जिज्ञासु: आगे जून में जो पत्रिका निकलती थी ज्ञानामृत वगैरह या वर्ल्ड रिन्युवल उसमें मम्मा का चित्र होता था बाहर, मुख्य पृष्ठ पर। आजकल उन्होने जो मैगजीन निकाली है उनमें प्रकाशमणि दादी का चित्र है। मम्मा का चित्र हटा दिया।
बाबा: अभी तो जैसे दुनिया में इलेक्शन वगैरह होते हैं तो जो भी गद्दी पर बैठने वाले होते हैं या गद्दी पर बैठते हैं उनके चित्र अखबारों में बहुत छपते हैं। जब नोट बनायेंगे तो नोटों पर भी उनका चित्र छापने लग पड़ेंगे। जैसा क्रिश्चियन्स होते थे तो नोटों पे किसका चित्र छापते थे? त्रिमूर्ति का? जो भी किंग एडवर्ड फर्स्ट या सेकेण्ड या थर्ड जो भी हुआ उसका चित्र छापा। तो ये भारतवर्ष के लोग जो हैं वो विदेशियों को फालो करने लग पडते हैं। यज्ञ में भी ऐसे ही होता है।

Student: Earlier, the magazine that used to be published in June, like Gyanamrit, etc. or World renewal, it used to have the picture of Mamma outside, on the main page. Nowadays the magazine that they have published carries the picture of Prakashmani Dadi. They have removed the picture of Mamma.
Baba: Now, just like the elections etc. that take place in the world, the pictures of those who are going to occupy the chair (i.e. rule) or those who occupy the chair (i.e. rule), are published a lot in the newspapers. When the currency notes will be printed, they will start printing their pictures even on the currency notes. For example, whose pictures did the Christians (i.e. Britishers) used to print on the notes? Was it of Trimurty? They printed the picture of King Edward the first or the second or the third that had been. So, these people of the Indian region start following the foreigners. A similar thing happens in the yagya as well.

समय: 23.58–25.19
जिज्ञासु: बाबा भक्तिमार्ग में 33 करोड देवी–देवताओं का गायन है।
बाबा: हां, जी।
जिज्ञासु: और सतयुग की आदि से लेकर त्रेता के अंत तक दस करोड़ आबादी है।
बाबा: हां जी।
जिज्ञासु: तो बाकी देवी–देवता कहां से आये?

Time: 23.58-25.19
Student: Baba, in the path of worship, there is praise of 330 million deities.
Baba: Yes.
Student: And from the beginning of the Golden Age to the end of the Silver Age the population is of 100 million.
Baba: Yes.
Student: So, where did the remaining deities come from?

बाबा: कोई भी धर्म की आत्मा आदि से लेकर के अंत तक आवेंगी या बीच में आना बंद कर देंगी? हैं? कोई भी धरम की आत्मा, हिन्दु हों, मुसलमान हों, सिक्ख हों, ईसाई हों, जब आना शुरु करेंगी तो आते–आते बीच में कभी रुक जाती हैं या अंत तक आती रहती हैं? अंत तक आती रहती हैं। ऐसे ही देवी–देवता सनातन धर्म की आत्माएं। अगर बीच में आना बंद कर दें तो उनके चौरासी जन्म होंगे या कम हो जावेंगे? उनके जनम ही कम हो जावेंगे। फिर वो आलराउंड पार्टधारी कहां हुए? हां, इसलिए 33 करोड़ आबादी होती है कलियुग के अंत में जाकर। ऊपर से जो भी आत्माएं उतरती हैं वो उन 33 करोड़ देवताओं में प्रवेश करती रहती हैं। जो सबसे जास्ती जनम लेते हैं वो ही सबसे जास्ती पतित बनते हैं। और ऊपर से आने वाली पावन आत्मा पतित में प्रवेश करेगी या पावन में प्रवेश करेगी? पतित में प्रवेश करती है।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: Will the soul of any religion come from the beginning to the end or will it stop coming in between? Hm? The soul of any religion, whether it may be Hindu, or Muslim, or Sikhs, or Christians, when they start coming, do they stop coming in between or do they keep coming till the end? They keep coming till the end. Similar is the case with the souls of the ancient deity religion. If they stop coming in between, then will they take 84 births or will it become less? Their number of births will become less. Then where are they all round actors? Yes, that is why the population (of deities) reaches to 330 million by the end of the Iron Age. All the souls that descend from above keep entering those 330 million deities. Only those who take most number of births become most sinful. And will the pure soul coming from above enter a sinful one or a pure one? It enters a sinful one.

समयः 25.23–27.50
जिज्ञासुः बाबा, एक चित्र में शंकर को चार भुजाधारी दिखाया गया है।
बाबाः हां, जी।
जिज्ञासुः शंकर को चित्र में चार भुजाओं में दिखाया है।
बाबाः हां।
जिज्ञासुः वो चार भुजाएं कैसी हैं?

Time: 25.23-27.50
Student: Baba, Shankar has been shown to have four arms in one of the pictures.
Baba: Yes.
Student: Shankar has been shown to have four arms in a picture.
Baba: Yes.
Student: How come He has four arms?

बाबाः शंकर जो है वो एक आत्मा का सम्मिश्रण है या कई आत्माओं का मेल है? (किसी ने कहा – कई आत्माओं का) तीन आत्माओं का मेल है। ब्रह्मा और राम वाली आत्मा ये दो आत्माओं का संकरण हुआ। शिव तो दोनों में न्यूट्रल हुआ। उसको तो अलग कर दो। वो तो भाव स्वभाव की उसमें बात ही नहीं।

Baba: Is Shankar a mixture of one soul or is He a combination of many souls? (Someone said, of many souls) He is a combination of three souls. It is a combination of the souls of Brahma and Ram. Shiv is neutral in both. Leave Him aside. There is no question of emotions and nature in Him.

तो दो आत्माएं हुई खास। राम और कृष्ण। फिर उनका विशेष सहयोग देने वाली कोई शक्तियां कोई आत्माएं होती हैं या नहीं? ब्रह्मा के साथ सरस्वती और राम के साथ सीता। या शंकर के साथ पार्वती। अभी भी वो चारों आत्माओं का संकरण है। सहयोगी हैं विशेष एक दूसरे की। और अंत में उन चारों के संस्कार मिल करके जब तक एक नहीं होंगे तब तक नई दुनिया की शुरुआत नहीं होगी। इसलिए ब्रह्मा को हजारों भुजाएं भी देते हैं। ब्रह्मा की हजार सहयोगी बन जाते हैं भुजाओं के रूप में, लेकिन शंकर के भुजाएं नहीं दिखाई जाती हैं हमेशा। सदाकाल के उनके सहयोगी कोई बन नहीं सकते। इसलिए जगन्नाथ को भुजाएं दो हैं वो भी टूटी हुई हैं। माना जो सख्त पार्ट होता है, उसको आदि से अंत तक कोई सहयोग नहीं करता। नहीं, देते हैं, नम्बरवार शक्ति अनुसार सहयोग देते हैं लेकिन आदि से अंत तक सहयोगी कोई बन करके रहें ऐसा, ऐसा नहीं होता है।

So, two souls are special. Ram and Krishna. Then, are there any shaktis, any souls which are especially helpful to them or not? Saraswati along with Brahma and Sita along with Ram. Or Parvati along with Shankar. Even now it is a mixture of those four souls. They are especially

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

helpful to each other. And in the end, until the sanskars of those four souls do not blend to become one, the new world will not begin. That is why Brahma is shown with a thousand arms as well. Thousand souls become helpful to Brahma in the form of arms, but Shankar is not always shown with arms. Nobody can become helpful to Him forever. That is why Jagannath has two arms, even they are broken. It means that nobody cooperates the (one who has a) strict role from the beginning to the end. No, they do cooperate; numberwise as per their power, but it does not happen that somebody may remain helpful (to Him) from the beginning to the end.

समयः 27.51–29.45
जिज्ञासुः बाबा, एक नयी बहन का प्रश्न है। अगर कोई आत्मा कर्मों के हिसाब–किताब के कारण भट्ठी अभी नहीं कर पा रही है। लेकिन बाबा को पहचान लिया है। तो उसका नंबर पहले होगा या भट्ठी करने वालों का नंबर पहले होगा?
बाबा– बाबा को नहीं पहचान पा रही?

Time: 27.51-29.45
Student: Baba, a new sister has a question. If a soul is not able to go for 'bhatti' now, due to some karmic accounts, but she has recognized Baba. So, will her number (i.e. rank) be first or will the number of those who complete the bhatti be first?
Baba: Is she not able to recognize Baba?

जिज्ञासुः बाबा को पहचान लिया है, लेकिन हिसाब–किताब के कारण, कोई कर्मों के हिसाब–किताब के कारण कोई भट्ठी नहीं कर पा रहे हैं। तो उसका नम्बर पहले.....।
बाबाः बहुत सी ऐसी बांधेली माताएं हैं जो बाबा से मिली भी नहीं हैं। भट्ठी नहीं की है लेकिन पत्र इतने अच्छे–अच्छे लिखती हैं जो भट्ठी करने वाले हैं उनके अंदर इतने भाव नहीं आ सकते। सबसे जास्ती बांधेली मातायें याद करती हैं या पुरुष याद करते हैं? या कन्याएं ज्यादा याद करती हैं? ज्यादा याद किसको आती है? बांधेली माताओं को जास्ती याद आती है। तो उनकी तो भट्ठी 24 घंटे की हो गई। उनकी तो भट्ठी ही भट्ठी लगी पड़ी है।

Student: She has recognized Baba, but because of some karmic accounts, she is not able to go for bhatti now. So, will her number be first…….?
Baba: There are many *bandheli* mothers (in bondages) who have not even met Baba. They have not gone for *bhatti*, but they write such nice letters that such feelings cannot emerge even in the minds of those who have completed *bhatti.* Do the *bandheli* mothers remember (Baba) the most or do the men remember (the most)? Or do the virgins remember more? Who remembers (Baba) more? The *bandheli* mothers remember more. So, it is like a 24 hours *bhatti* for them. They are always in *bhatti*.

जिज्ञासुः यह प्रश्न एक कन्या की है।
बाबाः हां, तो।
जिज्ञासुः प्रश्न जो है माता की नहीं है।
बाबाः कोई का भी प्रश्न हो प्रश्न तो प्रश्न है। हां जी।
जिज्ञासुः नहीं। वो बोलते है, मिल सकते हैं आपसे ? भट्ठी के बिना मिल सकते हैं आपसे?
बाबाः उनकी धारणा देखी जायेगी। बोला भी है – आत्मा रूपी सुई की सारी कट उतरने पर तुम डायरेक्ट बाप से सीखोगे। कोई न कोई देहभान रह जायेगा तब तक, तब तक नहीं डायरेक्ट मिल पायेंगे।

Student: This question has been raised by a virgin.
Baba: So what?
Student: The question has not been raised by a mother.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: Whoever might have raised the question, a question is a question. Yes.
Student: No, she is asking can she meet you? Can she meet you without completing the *bhatti*?
Baba: Her *dhaarnaa* (inculcation) will be seen. It has also been said, "when the entire alloy of the needle-like soul is removed, then you will learn directly from the Father." Until some form of body consciousness remains, you will not be able to meet directly.

समयः 29.47–30.55
जिज्ञासुः बाबा जितने भी मिनी मधुबन बने हुए हैं वहां पर अगर कोई भट्टी करने के योग्य नहीं हैं शारीरिक रूप से अथवा आर्थिक रूप से.....।
बाबाः हां।
जिज्ञासुः शारीरिक रूप से अथवा आर्थिक रूप से।
बाबाः मुरली में बोला है, ''इस बात को मैं नहीं मान सकता कि बाप से मिलने के लिए कोई के पास पैसे न हों।''
जिज्ञासुः शारीरिक रूप से?

Time: 29.47-30.55
Student: Baba, if there is someone in whichever mini madhubans that have been made; who is not fit to attend *bhatti* from the physical point of view or financial point of view……..
Baba: Hm!
Student: From the physical point of view or financial point of view.
Baba: It has been said in the Murli, "I cannot believe that someone does not have money to meet the Father."
Student: And from the physical point of view?

बाबाः हां। शारीरिक रूप से बूढ़ी–बूढ़ी अस्सी साल की माताएं अमरनाथ की यात्रा करके आ जाती हैं। वो भी उस जमाने में जबकि कोई भी साधन नहीं मिलते थे। और आज? आज तो कोई बीमार–धीमार दुःखी रोगी परेशान होता है वो भी विलायत में जाके अपने इलाज कराके वापस आ जाता है। तो यहां तो चलेने–फिरने की भी बात नहीं है। ये सब बहानेबाजियां हैं।

Baba: Yes, physically aged eighty years old mothers return from pilgrimages to *Amarnath*. That too in the period when one did not used to find any means (of transport). And today? Today, if anyone falls sick, becomes sorrowful, disturbed, even he goes to the foreign countries and comes back after obtaining treatment. So, here there is not even a question of moving around. All these are excuses.

समयः 31.20–32.04
जिज्ञासुः बाबा, ये जो बूढा अमरनाथ है।
बाबाः हां।
जिज्ञासुः उसका क्या बेहद में क्या अर्थ है?
बाबाः हां?
जिज्ञासुः बूढ़ा अमरनाथ।
बाबाः बूढ़ा?
जिज्ञासुः अमरनाथ।

Time: 31.20-32.04
Student: Baba, this old *Amarnath* which is there.
Baba: Yes.
Student: What does it mean in an unlimited sense?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: What?
Student: Old *Amarnath*.
Baba: Old?
Student: *Amarnath*.

बाबा: वो तो बहुरूपी है। कभी बुड्ढा बन जाता है कभी नौजवान बन जाता है। अभी आजकल शंकर के चित्र बने हुए हैं, पट्ट लेटा पड़ा है बच्चे के रूप में। तो वो तो बहुरूपी है।
जिज्ञासु: बूढ़े का अर्थ क्या है?
बाबा: बूढ़े का मतलब है बहुत अनुभवी। थोड़ा अनुभवी नहीं। (किसी ने कुछ कहा) ऐसे तो बाबा ने मुरली में बोला है, ''शिवबाबा कभी बूढ़ा होता ही नहीं।''

Baba: He is a *bahuroopi* (a mimic). Sometimes he becomes an old person, sometimes he becomes a young man. Now-a-days there are pictures of Shankar, in which he is lying flat in the form of a child. So he is a *bahuroopi*.
Student: What is the meaning of 'old'?
Baba: Old means very much experienced. Not a little experienced. (Someone said something) As such Baba has said in the Murli, "Shivbaba never becomes old at all."

समय: 32.05–32.52
जिज्ञासु: बाबा, अभी जो मुनियों और साधु संतों के पीछे लोग ढ़ेरों के ढ़ेर जा रहे हैं उनको शिवबाबा का संदेश मिलेगा?
बाबा: क्यों नहीं मिलेगा?
जिज्ञासु: वो कैसे मिलेगा?

Time:32.05-32.52
Student: Baba, will the lots and lots of people who are now going after the sages and saints receive Shivbaba's message?
Baba: Why will they not receive it?
Student: How will they receive it?

बाबा: वो ऐसे मिलेगा, कि बाबा ने बोला, ''आगे चलके मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर, गुरुद्वारे ये सब चलने लग पड़ेंगे।'' क्या? ये सन्यासी ऐसे मरेंगे जैसे पशु मरते हैं। इनके मुंह में कोई पानी डालने वाला नहीं मिलेगा क्योंकि सब डरते हैं इनको ज्ञान कौन सुनाये जाके। ये जिन्दगीभर जन्म–जन्मान्तर हमको ज्ञान सुनाते रहे। मारे अहंकार के इन्होंने कभी किसी की बात मानी नहीं।

Baba: They will receive it like this; Baba has said, "In future all these temples, mosques, churches, Gurudwaras will follow." What? These *sanyasis* will die just like animals. There will be no one to put water in their mouth because, everyone is afraid to narrate knowledge to them. They kept narrating knowledge to us throughout the life for births after births. They never accepted the issues of anyone due to ego.

समय: 32.55–35.48
जिज्ञासु: बाबा रुद्र ज्ञान यज्ञ और शिव ज्ञान यज्ञ में अंतर क्या है?
बाबा: शिव ज्ञान यज्ञ नहीं होता है। विनाश ज्वाला रुद्र ज्ञान यज्ञ से प्रज्वलित होती है। मेरा नाम तो शिव ही है। मेरी बिन्दी का नाम शिव है वो कभी बदलता नहीं है। क्या? जब शरीर में प्रवेश करते हैं तो नाम बदल जाता है। तो शरीर का नाम पड़ता है। जैसे–जैसे शरीर से काम होते हैं वैसा–वैसा नाम पड़ता है। तो कोई शरीर के द्वारा रौद्र रूप अर्थात विकराल रूप धारण किया होगा। यज्ञ के आदि में भी एंटी ओम मंडली हो गई थी। विकराल रूप धारण किया था। नाम पड़ गया रुद्र ज्ञान यज्ञ।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 32.55-35.48
Student: Baba, what is the difference between *Rudra gyaan yagya* and *Shiv gyaan yagya*?
Baba: *Shiv gyaan yagya* does not exist. The flame of destruction ignites from the *Rudra gyaan yagya*. My only name is Shiv. The name of my point (i.e. soul) is Shiv. It never changes. What? When He enters in the body, the name changes, so the body gets a name. The name is assigned depending upon the nature of the work performed through the body. So, He must have assumed a *Raudra* form, i.e. a fierce form through a body. Even in the beginning of the yagya an anti-Om Mandali had emerged. He assumed a fierce form. The yagya was named 'Rudra gyan yagya'.

फिर यादगार बनी हुई है। रुद्र यज्ञ रचते हैं तो लाखों लाख शालिग्राम बनाते हैं। क्या? करोड़ों नहीं बनाते हैं। लाख, दो लाख शालिग्राम बनाते हैं। दो लाख भी नहीं बन पाते हैं। बहुत टाइम लगता है। लाख शालिग्राम का ज्यादा गायन है। इसका मतलब ये हुआ कि 9 लाख जो सितारे हैं उनमें साढ़े चार लाख हैं जन्म लेने वाले। वो तो रुद्र माला के हैं ही नहीं। बीज नहीं है। जो जन्म देनेवाले है वो साढ़े चार लाख हैं। (किसी ने कहा – रुद्र माला) हां, साढ़े चार लाख। और उन साढ़े चार लाख में भी सूर्यवंशी और चंद्रवंशी वो थोड़े हैं। बाकी और–और दूसरे वंश के हैं – बीज। तो लाख, दो लाख कहे जाते हैं।

Then the memorial has been made. When Rudra yagya is organized, lakhs and lakhs of Shaligrams (small pebbles considered sacred in the path of devotion) are created. What? Crores (millions) are not created. A lakh or two Shaligrams are created. Not even two lakhs are made. It takes a lot of time. The praise is much of lakh (hundred thousand) Shaligrams. It means that among the 9 lakh stars, four and a half lakhs are those who take birth. They do not belong to the *Rudramala. They are not the seeds. Those who are the ones to give birth* and are four and a half lakhs in number. (Someone said – *Rudramala*) Yes, four and a half lakhs. And even among those four and a half lakhs, those who are *Suryavanshis* and *Chandravanshis* are very few. And the rest are the seeds of other dynasties. So, only a lakh or two are said (to be made).

जिज्ञासु: साढ़े चार लाख में भी सब धर्मों की आत्मायें तो है ना।
बाबा: हर धर्म की बीज हैं। हां। जो बीज रूपी स्टेज प्राप्त करते हैं शरीर रहते। तो उनकी यादगार बनी हुई है शालिग्राम के रूप में। उसमें बंधन दिखाया जाता है। माना जनम–मरण के चक्र में आने वाले हैं।

Student: Even among the four and a half lakhs the souls of all the religions are included, are they not?
Baba: There are seeds of every religion. Yes, those who achieve the seed-form stage while living in their bodies. So, their memorial has been made in the form of a *shaligram*. A bond (*bandhan* or thread) is shown in it. It means that they are the ones to come in the cycle of birth and death.

समय: 36.30–37.45
जिज्ञासु: सतयुग त्रेता में रात होती है या नहीं होती?
बाबा: ब्रह्मा की रात और ब्रह्मा का दिन गाया हुआ है। क्या गाया हुआ है? ब्रह्मा की रात और ब्रह्मा का दिन गाया हुआ है। ब्रह्मा की रात और दिन सो ब्राह्मणों की रात और दिन। प्रजापिता का दिन और रात गाया हुआ है? तो ब्रह्मा है चंद्रवंश और प्रजापिता है सूर्यवंश। तो जो नई दुनिया की शुरुआत होगी वो चंद्रवंशियों से होगी या सूर्यवंशियों से होगी? सूर्यवंशियों से होगी। हैं? तो जहां सूर्य ही सूर्य है, चंद्रमा का प्रकाश सूर्य में मर्ज हो गया। या सितारों का प्रकाश भी सूर्य में मर्ज हो गया तो वहां चंद्रमा कैसे दिखाई देगा? वहां सूर्य की रोशनी ही रोशनी रहेगी। जैसे उत्तरी ध्रुव, दक्षिणी ध्रुव पे 6 महीने दिन ही दिन रहता है।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 36.30-37.45
Student: Do nights occur in the Golden Age and Silver Age or not?
Baba: The praise is of Brahma's night and Brahma's day. What is the praise? The praise is of Brahma's night and Brahma's day. Brahma's night and day so is Brahmins' night and day. Is the praise of Prajapita's day and night? So, Brahma is the *Chandravansh (the Moon dynasty)* and Prajapita is the *Suryavansh (the Sun dynasty).* So, will the new world begin with the *Chandravanshis* or the *Suryavanshis*? It will begin with the *Suryavanshis*. Hm? So, where there is Sun and only the Sun, the Moon's light merged in (the light of) Sun, or where the light of even the stars has merged in the Sun, then how will the Moon be visible there? There will be only the light of Sun there. For example, there is just day at the North Pole and the South Pole for 6 months.

समयः 37.47–39.34
जिज्ञासुः राधे–कृष्ण के मां–बाप का गायन क्यों नहीं है?
बाबाः संगमयुगी राधे–कृष्ण के मां–बाप का गायन नहीं है। सतयुगी राधे–कृष्ण की तो बात ही नहीं। सतयुगी राधे कृष्ण की तो बात ही नहीं। सतयुगी राधे–कृष्ण के मां–बाप की बात होगी? सतयुगी राधा–कृष्ण, त्रेतायुगी राम–सीता, इनकी कोई हिस्ट्री मिलती है क्या? शास्त्रों में हिस्ट्री है? शास्त्रों में भी नहीं है। कहां की हिस्ट्री है? संगमयुग की बातें हैं। माना संगमयुग में जो राधा–कृष्ण हैं वो अलग–अलग घराने के हैं। राधा है चंद्रवंशी और कृष्ण है सूर्यवंशी। और कृष्ण के साथ कंस दिखाया जाता है तो वो कंस सतयुग में होता है या संगमयुग में होता है? तो अभी कृष्ण भी है और कंस भी अपना काम कर रहा है।

Time: 37.47-39.34
Student: Why isn't there the praise of the parents of Radha & Krishna?
Baba: There is no praise of the parents of the Confluence-aged Radha and Krishna. There is no question of the Golden-aged Radha and Krishna. The question is not of the Golden-aged Radha and Krishna. Will it be a topic of the parents of the Golden-aged Radha and Krishna? Is there any history available of the Golden-aged Radha and Krishna, Silver-aged Ram and Sita? Is there the history in the scriptures? It is not available in the scriptures as well. Of when is the history? These are the topics of the Confluence Age. It means that the Radha and Krishna of the Confluence Age belong to different dynasties. Radha belongs to the Moon Dynasty (*Chandravanshi*) and Krishna belongs to the Sun Dynasty (*Suryavanshi*). And *Kansa (the maternal uncle of Krishna who wanted to kill him)* is shown along with Krishna; so does that *Kansa* exist in the Golden Age or in the Confluence Age? So, now Krishna is there as well as *Kansa* is doing his job.

लोग पूछते हैं तुम्हारा भगवान है तो भागा–भागा क्यों फिरता है? अरे तुम इतने शास्त्र पढ़ते हो। इन शास्त्रों में क्या लिखा हुआ है? कंस के डर से कृष्ण भगवान गांवड़ों–गांवड़ों में छुपते फिरे। भस्मासुर के डर से शंकर भगवान सारी दुनिया में डोलते–डोलते फिरे। रावण के डर से तुम्हारे राम भगवान जंगल में मारे–मारे फिरे। अरे, वो भगवान नहीं, तुम मानते क्या? कहां की यादगार है? संगमयुग की यादगार है।

People ask, "If He is your God, then why does he keep running here and there? Arey, you read so many scriptures. What has been written in these scriptures? God Krishna used to hide in villages due to the fear of *Kansa*. God Shankar had to run around the world due to the fear of *Bhasmasur*[i]. Your God Ram wandered in the jungles due to the fear of Ravana. Arey, do you consider that they are not Gods? Of when is the memorial? It is the memorial of the Confluence Age.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समयः 39.35–42.24
जिज्ञासुः बाबा जो मंदिरों में शंकर की मूर्ति दिखाते हैं, उनके सामने शिव की शिवलिंग दिखाते हैं।
बाबाः हं।
जिज्ञासुः तो उसके ऊपर कलश दिखाते हैं। कलश दिखाते हैं उसके ऊपर।
बाबाः शिवलिंग के ऊपर कलश दिखाते हैं।
जिज्ञासुः हां, उसमें बूंद–बूंद पानी गिरता रहता है। उसका क्या?

Time: 39.35-42.24
Student: Baba, the *Shivling* of Shiv is shown (to be kept) in front of the idol of Shankar in the temples.
Baba: Hm.
Student: So, above that a pot is shown (to be hanging from the ceiling). A pot is shown above it.
Baba: A pot is shown above the Shivling.
Student: Yes, drops keep falling over it (from the pot). What about it?

बाबाः मतलब, जो विग्रह दिखाते हैं शरीरधारी का वो है देहभान की यादगार। जब देहभान होता है तभी कोई याद करता है। जब देहभान खतम ही हो गया तो बिन्दी बन गया ना। भान की तो बात ही नहीं। लेकिन जब बिन्दुरूपी स्टेज बनती है, निराकारी स्टेज बनती है जिस मुकर्रर रथ में शिव प्रवेश करता है और उसकी मुकर्रर निराकारी स्टेज बन जाती है तो उसकी यादगार लिंग बनता है। लिंग इतना बड़ा होता है या उसमें बिन्दु सुप्रीम सोल की यादगार है? बिन्दु सुप्रीम सोल की यादगार है और लिंग जो है वो साकार विग्रह की यादगार है। जो साकार विग्रह को इंद्रियां तो हैं लेकिन इंद्रियों के होते हुए भी इंद्रियों का भान जैसे नहीं है। भले ये संसार में कितनी भी ग्लानि होती रहे। वो कानों से एक कान से सुनेगा, दूसरे कान से निकाल देगा। देखते हुए नहीं देखना। सुनते हुए नहीं सुनना। ऐसे ही कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हुए भी किया–किया न किया।

Baba: It means that the idol of the bodily being that is shown is a memorial of body consciousness. Someone remembers only when there is body consciousness. When the body consciousness ended then he became a point, didn't he? There is no question of (body) consciousness at all. But, when one achieves the point-like stage, the incorporeal stage; and when the appointed chariot in which Shiv enters achieves the incorporeal stage permanantly, then a *ling* is created in a memorial of that stage. Is the *ling* actually so large or is it a memorial of the point Supreme Soul? The point is a memorial of the Supreme Soul. And the *ling* is a memorial of the corporeal idol. That corporeal idol does have organs but in spite of having organs, there is no consciousness of the organs. Howmuchever defamation may take place in this world; he will listen it through one ear and leave it through the other. Not seeing even while observing. Not listening even while hearing. Similarly, even while performing actions through the bodily organs, it is as if it was not performed at all.

हम कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हैं तो हमको याद आता रहता है जिन्दगी भर। आता है कि नहीं याद आता है? और उसको? उसको याद नहीं आयेगा। क्यों नहीं याद आता? क्योंकि निराकारी स्टेज एक ऐसी स्टेज है जिसमें मन एक के ऊपर आग्रह है। तो कोई की स्मृति ही नहीं है। जब स्मृति ही नहीं है तो जैसे भोग भोगा–भोगा, न भोगा। इसलिए ये बात समझ में आती है कि जो ऊपर कलश रखा हुआ है वो निराकारी स्टेज में जब नीचे उतरेगा तो बूंद–बूंद ज्ञान टपकता है बुद्धि में। क्या? जितनी–जितनी हम निराकारी स्टेज में टिकेंगे, उतना मनन–चिंतन–मंथन जास्ती चलेगा। माना बूंद–बूंद ज्ञान टपकता रहेगा। सारा एडवान्स नालेज एकदम आ जाता है बाहर? हैं? टाइम लगता है।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

When we perform actions through the bodily organs, we are reminded of them throughout our life. Do we remember or not? And what about Him? He will not remember. Why does he not rememeber? It is because the incorporeal stage is such a stage in which the mind is focused on one. So, there is no memory of anyone at all. When there is no memory at all, then even if one enjoys the pleasures of the organs it is as if one did not enjoy at all. That is why one can understand that when He will come down from an incorporeal stage, then the knowledge drips in the intellect drop by drop from the pot that has been placed above. What? The more we will fix in the incorporeal stage, the thinking and churning will take place to that extent. It means that the knowledge will keep dripping drop by drop. Does the entire advance knowledge comes out at once? Hm? It takes time.

समयः 42.25–44.36
जिज्ञासुः बाबा एक प्रश्न और है। एक मुरली में बोला है, ''हमको कौड़ी से हीरे जैसा बनना है।''
बाबाः हां, जी।
जिज्ञासुः उसका अर्थ?

Time: 42.25-44.36
Student: Baba, there is one more question. It has been said in a Murli, "We have to transform from shells into diamonds."
Baba: Yes.
Student: What does it mean?

बाबाः स्त्री हो या पुरुष हो। स्त्री को अपने शरीर के अंगों का बहुत भान रहता है, देहभान रहता है। उसका शरीर कौड़ी मिसल होता है। आकार स्त्री के अंग का स्पेशल जो कौड़ी मिसल होता है, इस आधार पर उसको स्त्री कहा जाता है। और पुरुष जो है वो जिन्दगीभर एंटी सेक्स को याद करते हैं। पुरुष किसे याद करेगा? स्त्री को याद करता है काम विकार की प्रधानता होने के कारण। तो पुरुष जब मरेगा तो स्त्री चोला याद आयेगा। सारा जीवन जो याद किया तो अंत मते सो गते हो जाती है। तो उसको वो ही कौड़ी याद आती है। तो पुरुषों को तो वो कौड़ी याद आती ही आती है। लेकिन स्त्रियों में देहभान होता है अपने अंगों का। इसलिए उनको भी वो ही याद आता है। इसलिए कौड़ी मिसल जीवन हो गया। अभी आत्मा, में जो बुद्धि में, आत्मा माना बुद्धि, मन–बुद्धि, मन–बुद्धि में मरते दम तक क्या याद आता है? वो कौड़ी याद आती है। कौड़ी में लगाव लग जाता है। इसलिए कौड़ी मिसल जीवन हो गया। और जिसकी बुद्धि निराकारी बन जाती है वो जैसे हीरा बन गया। उसमें ज्ञान ही ज्ञान टपकेगा। देह की याद, चाहते हुए भी देह को याद करना चाहे तो भी नहीं याद आयेगा।

Baba: Whether it is a woman or a man. Women are very conscious of the organs of their body; they are body conscious. Her body is like a cowrie (shell). The shape of the organ of a woman is especially like a cowrie; on the basis of this she is called a woman. And the men remember the anti-sex throughout their life. Whom will a man remember? Because of the dominance of lust he remembers woman. So, when a man will die, he will remember the female body. Whatever he remembered throughout the life; your final thoughts lead to your final destination. So, he remembers only that cowrie. So, men do remember that cowrie. But women are conscious of their organs. That is why they too keep remembering that. That is why the life has become like a cowrie. Now in the soul, i.e. the intellect; soul means the intellect, the mind and the intellect; what does the mind and intellect remember till the last breath? It remembers that cowrie. It becomes attached to the cowrie. That is why the life has become like a cowrie. And the one, whose intellect becomes incorporeal, it is as if he became a diamond. Only knowledge will drip in it. The remembrance of the body, he will not remember the body even if he wants to.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: शिव परमपिता परमात्मा कौड़ी से हीरा बनाने के लिए आये हैं।
बाबा: हां, मने मन–बुद्धि रूपी आत्मा को ऐसा बनाते हैं, जिसमें हीरा ही, चमक मारने वाला, ज्ञान की चमक मारने वाला हीरा ही याद आता है। स्टार ही याद आवेगा। बुद्धि नीचे नहीं उतरेगी।

Student: The Supreme Father Supreme Soul Shiv has come to transform us from cowries (shell) to diamonds.
Baba: Yes, it means that He makes the mind and intellect-like soul such that it remembers only the diamond, the diamond which radiates, which gives out the light of knowledge. He will remember only the star. The intellect will not experience downfall.

समय: 44.40–46.10
जिज्ञासु: बाबा बड़े लोग, पंडित आदि जो बोलते हैं तिरासी लाख योनि बनेंगे। पशु–पखेरू बनेंगे जब हम मरेंगे। तो उनके बुद्धि से कैसे निकलेगा कि पशु नहीं बनेंगे? कैसे समझाना पड़ेगा?
बाबा: उन्हें बताना पड़े कि कोई भी बीज होता है तो बीज में अपने संस्कार होते हैं कि नहीं? बीज में जैसे संस्कार होंगे वैसा ही वृक्ष तैयार होगा। आम का बीज होगा तो आम का दरख्त बनेगा, आम के फल निकलेंगे। बैंगन का बीज होगा तो बैंगन का पौधा बनेगा और बैंगन ही उसमें पैदा होगा। ऐसे थोड़े ही कि बैंगन में से आम निकल आयेगा। नहीं निकलेगा ना। तो ऐसे ही मनुष्य आत्मा जो है पहले उनको समझाओ तुम ज्योति बिन्दु हो। जो भी आत्मायें हैं, जो भी शरीरधारी हैं, वो शरीर नहीं हैं। शरीर तो आज है कल खत्म हो जायेगा लेकिन उनकी आत्मा तो कायम रहेगी। तो आत्मा है। जब आत्मा की ये बात बुद्धि में बैठ जायेगी तब उन्हें बताओ कि तुम भी बीज हो। और किस जाति के बीज हो? मनुष्य जाति के हो या पशु पक्षी जाति के हो या कीड़े मकोड़े की जाति के हो। जिस जाति के होंगे उसी में जन्म लेंगे।

Time: 44.40-46.10
Student: Baba, big people, pundits etc. say that 83 lakh species will be made. When we will die we will become animals and birds. So, how will it be removed from their intellect that they will not become animals? How will we have to explain?
Baba: They will have to be told that, does any seed have its own sanskars or not? As the sanskars will be in a seed, so shall the tree become ready. If it is a seed of mango, it will become a mango tree (*darakht*); fruits of mango will grow from it. If it is a seed of brinjal, then it will develop into a plant of brinjal and only brinjals will grow on that plant. It is not as if mangoes will grow on the brinjal plant. It will not grow, will it? So, similarly, first explain to them that you are a human soul, points of light. All the souls, the bodily beings are not bodies. Body exists today and it will perish tomorrow, but their soul will remain as it is. So, it is a soul. When this topic of soul fits in the intellect, tell them that you are a seed too. And you are the seed of which species? Do you belong to the human species or to the animal or bird species or to the species of worms and insects? As is your species so shall be the species where you will take (re)birth.

समय: 47.45–49.43
जिज्ञासु: बाबा जो 9 लाख आत्मायें हैं सूर्यवंशी इनमें से कोई ऐसी आत्मा है जिनमें कोई प्रवेशता न होती हो?
बाबा: हैं।
जिज्ञासु: कोई ऐसी आत्मायें हैं सूर्यवंशी में जिनमें कोई दुसरे धर्म की आत्मी प्रवेश नहीं हुई ?
बाबा: कोई आत्माऐं प्रवेश न करती हो? एक तो मुकर्रर रथधारी है जिसमें कोई प्रवेश नहीं करता सिवाय सुप्रीम सोल के। और प्रवेश करता भी है तो उसके जैसा हो जाता है। जैसे ब्रह्मा की सोल प्रवेश करती है। सूक्ष्म शरीरधारी है। वो जैसे ही उसके सम्पर्क में जायेगी वैसे ही बिन्दु, बिन्दु बन जायेगी। (जिज्ञासु ने कुछ कहा) क्या बोला?
जिज्ञासु: जो बाबा के बच्चे हैं उनमें इनस्पिरेटिंग आत्मायें प्रवेश करते हैं ना।
बाबा: हां।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 47.45-49.43
Student: Baba, is there some soul among the nine lakh *suryavanshi* (of the Sun dynasty) souls, in whom no entrance takes place?
Baba: Hm?
Student: Is there any soul among the *suryavanshi*s in whom no soul of the other religion enters?
Baba: No soul enters? One is the appointed chariot, in whom nobody enters except the Supreme Soul. And even if someone enters, he becomes like Him. For example the soul of Brahma enters. It is a subtle bodied being. As soon as it will come in His contact, it will become a point (i.e. soul). (The student said something). What did you say?
Student: The inspirating souls enter in Baba's children, don't they?
Baba: Yes.

जिज्ञासु: जो हम पुरुषार्थ करते कभी ढीला हो जाते, कभी उमंग उत्साह से करते।
बाबा: हां।
जिज्ञासु: इसका मतलब हममें ऐसी कोई सोल्स प्रवेश कर रही क्या? ऐसे पूछ रहे हैं माताजी। जब हम....
बाबा: इनस्पिरेटिंग का मतलब है इन्स्पायर करने वाली, उमंग उत्साह बढ़ाने वाली। तो हम जब उमंग उत्साह में आते हैं, ईश्वरीय सेवा करते हैं, उस ईश्वरीय सेवा का रिजल्ट भी देखते हैं तो इससे साबित होता है कि कोई आत्मा ने प्रवेश करके हमसे काम कराया। लेकिन कभी हम डाउन हो जाते हैं। तो इनस्पिरेटिंग पार्टी थोड़े ही है वो। वो तो हमारे पूर्व जन्म का हिसाब किताब है जिसके आधार पर हम डाउन हो जाते हैं।

Student: The efforts that we make, sometimes we become loose; sometimes we di it with zeal and enthusiasm.
Baba: Yes.
Student: Does it mean that some souls enter into us? Mataji wants to ask this. When we…
Baba: Inspirating means those who inspire, the ones who increase the zeal and enthusiasm. So, when we experience zeal and enthusiasm, when we do Godly service, and also see the result of that Godly service, then it proves that some soul entered and made us do this work. But sometimes we become down. So, that is not an inspiriting party. Those are the accounts of our past birth on the basis of which we become down.

समय: 49.44–51.08
जिज्ञासु: बाबा ब्रह्मा बाबा की आत्मा जो है, वो गुल्जार दादी के तन में कब तक आती रहेगी?

Time: 49.44-51.08
Student: Baba, how long will the soul of Brahma Baba continue to come in the body of Gulzar Dadi (a BK sister)?

बाबा: जब तक सूर्य प्रत्यक्ष नहीं होगा तब तक दूसरी तरफ सम्पूर्ण चन्द्रमा कैसे, जब तक ज्ञान सूर्य उदय नहीं होगा तब तक दूसरी तरफ ज्ञान चंद्रमा अस्त कैसे हो जायेगा? जब पूर्णमासी का दिन होता है, पूर्णमासी माना चंद्रमा जब पूर्ण हो जाता है, होता है कि नहीं? चंद्रमा जब संपूर्ण बनता है तो ज्ञान चंद्रमा कौन है? ब्रह्मा। तो ब्रह्मा जब संपूर्ण बनेंगे माने उनकी बुद्धि में ये बैठ जायेगा कि गीता का भगवान मैं कृष्ण वाली आत्मा नहीं हूं, एक बात पर रूका हुआ है सारा काम। तो उस समय तक उनका यही पार्ट चलता रहेगा। (किसी ने कुछ कहा) अधूरा ब्रह्मा है। पूर्णमासी का चंद्रमा नहीं है। अधूरा चंद्रमा है तब तक शंकर के मस्तक पे विराजमान है। जैसे ही संपूर्ण बनेगा, अस्त होगा, और सूर्य प्रत्यक्ष हो जायेगा। लेकिन तुम्हें परेशानी क्या है उनके आने से? है? वो आते हैं तो कम से कम कुछ न कुछ राज की बातें ही मिलती हैं ना। (किसी ने कुछ कहा) हां।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: Until the Sun is not revealed, how will the complete moon on the other side …….; until the Sun of knowledge does not rise, how can the Moon of knowledge set on the other side? When it is a full moon (*poornamaasi*) day; *poornamaasi* means when the Moon becomes complete; does it become or not? When the Moon becomes complete; so who is the Moon of knowledge? Brahma. So, when Brahma becomes complete, i.e. when it fits in his intellect that I, the soul of Krishna am not the God of Gita; the entire task is held-up upon one topic. So, his part will continue the same till that time. (Someone said something) It is an incomplete Brahma. It is not a full moon. Until he is an incomplete moon, it is seated on the forehead of Shankar. As soon as he becomes complete, he will set, and the Sun would be revealed. But why are you disturbed by his entry (in Gulzar Dadi)? When he comes, we at least come to know some secret topics, don't we? (Someone said something) Yes.

समयः 51.10–52.45
जिज्ञासुः बाबा कहते हैं ना मुरली के विरुद्ध तो ब्रह्मा बाबा नहीं बोलते इसलिए अव्यक्त वाणी को भी श्रीमत कहा जाता है। लेकिन बहुत नये लोग पूछते हैं उसमें, अव्यक्त वाणी में दादी दीदियों से पर्सनल बातें पूछते रहते है बापदादा – दादीयां क्या खा रही हो क्या कर रही हो? फलाने विंग वाले क्या कर रहे हैं? हाथ उठाओ। ये सब तो पहले मुरली में नहीं होता था।
बाबाः हां।

Time: 51.10-52.45
Student: Baba says that Brahma Baba does not speak against Murlis, doesn't He? That is why Avyakta Vani is also called as Shrimat. But many new people ask that – in the Avyakta Vanis Bapdada asks personal questions to Dadi Didis – Dadi, what are you eating, what are you doing? What are those belonging to a particular wing doing? Raise your hands. All this was not used to be there in the Murlis.
Baba: Yes.

जिज्ञासुः ये सब फालतू बातें हो गया ना। अव्यक्त वाणी के दूसरे पेज से। तो वो भी बाबा क्यों पढ़ते हैं? हम तो समझाते है सब बाकी धर्मों की आत्मा हो गए ये दादी दीदीयां और खुद बाबा मुख से पढते है.....
बाबाः शिवबाबा सारी दुनिया को पढ़ाने आया है या सिर्फ सूर्यवंशियों को ही पढ़ाने आया है? शिवबाबा का कनेक्शन हर धर्म की आत्मा से है या कोई विशेष धर्म की आत्माओं से ही है? आता है खास आता है भारतवासियों के लिए, सूर्यवंशियों के लिए, लेकिन आम रूप से सारी दुनिया का कल्याणकारी है।

Student: All these are useless topics, are they not? From the second page of the Avyakta Vanis. So, why does Baba read it too? We explain that all these Dadi and Didis are of other religions and (when) Baba reads it Himself through His mouth……..
Baba: Has Shivbaba come to teach the entire world or has He come to teach only the Suryavanshis? Does Shivbaba have connection with the souls of every religion or is it with the souls of some particular religion? He comes, He does come especially for the Indians, for the Suryavanshis, but, in general, He is benefactor for the entire world.

जिज्ञासुः अव्यक्त वाणियों में दादियों के लिए ऐसे बोलने से नयों की बुद्धि में, जो कमजोर आत्माएं हैं, खुद बाबा दादियों के लिए बोले तो....
बाबाः जो कमजोर आत्माऐं होती है, उन्हीं के अन्दर ईर्ष्या–द्वेष होता है कि दीदी–दादियों से इतना क्यों ऐसे मिक्स हुए पड़े हैं? उनको क्यों पूछते हैं हमको क्यों नहीं पूछते? राज़ उनकी बुद्धि में नहीं बैठा है – इसलिए। देखा जाये तो दीदी दादियों को तो कुछ भी नहीं मिला। उनको तो सिर्फ ब्रह्मा बाबा बहलाय रहे हैं। तो बहलाने भी नहीं देंगे?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: Because of saying such words for Dadis in the Avyakta Vanis, in the intellect of the new ones, the weak souls; if Baba Himself says for the Dadis then….
Baba: Only those who are weak souls have the feelings of jealousy and envy that why is he so mixed up with (i.e. close to) the Didi Dadis? Why does he enquire about them and why does he not enquire about us? It is because the secret has not fitted in their intellect. If we analyse, (we will find that) the Didi Dadis did not get anything. They are just being entertained by Brahma Baba. So, will you not even let him entertain them?

समयः 52.55–53.45
जिज्ञासुः बेसिक वाले कहते हैं क्लास और ग्लास मिस नहीं करना। माना बहुत बार चाय देते रहते हैं। इधर क्यों चाय मना करते, कितना भी समझाने से समझते नहीं।
बाबाः हं।
जिज्ञासुः एडवान्स में चाय मना है। बेसिक वाले तो चाय पीते।
बाबाः तो।
जिज्ञासुः तो यहां चाय क्यों नहीं पी सकते हैं?
बाबाः चाय क्यों नहीं पी सकते? (सभी ने कहा – हां) अरे! एडवान्स वाले तो मुरली को मानते हैं। बेसिक वाले तो मुरली को नहीं मानते हैं। दीदी–दादियों को मानते हैं। मुरली में बोला है कि, ''देवतायें चाय पीते हैं क्या?'' फिर? तुम्हें देवता बनना है ना। तो देवताओं का जो खान–पान है सो खाओ पियो।

Time: 52.55-53.45
Student: Those with the basic knowledge say that one should not miss the class and the glass. It means that they keep serving tea many times. Why is tea not allowed here; they don't understand howevermuch we explain them.
Baba: Hm.
Student: Tea is not allowed in advance knowledge. Those who are of basic knowledge drink tea.
Baba: So what?
Student: So, why can't we drink tea here?
Baba: Why can't we drink tea? (Everyone said – Yes) Arey! Those who who are in the advance knowledge accept the Murlis. Those who are in the basic knowledge do not accept the Murlis. They believe the Didi-Dadis. It has been said in the Murlis, "Do the deities drink tea?" Then? You have to become deities, haven't you? So, eat and drink whatever the deities eat and drink.

समयः 53.50–54.45
जिज्ञासुः बाबा ऐसे बोले हैं कि स्त्री..... जहां भी देखो, स्त्री की ग्लानि दिखाई गई है।
बाबाः हैं?
जिज्ञासुः क्योंकि माताओं को बहनों को देहभान का ज्यादा जोर दिया हुआ है। तो आज जो पूजा हो रही है, मैं देखती हूं कि चैतन्य में देवियों की ज्यादा पूजा हो रही है।
बाबाः हां।
जिज्ञासुः जो मंदिर बने हुए हैं ये।
बाबाः हां।

Time: 53.50-54.45
Student: Baba has said that wherever we see, the defamation of women have been shown.
Baba: Hm?
Student: It is because mothers, sisters are said to be more body conscious. I see in that the worship (of deities) that is taking place today; is more of the female deities in living.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: Yes.
Student: The temples that have been built.
Baba: Yes.

जिज्ञासु: क्यों दिखाया गया है देहभान इतना, जोर दिया हुआ है?
बाबा: देहभान होता है तो पूजा क्यों होती है? उन्होंने अपने को पूज्य बनाया होगा। नहीं बनाया होगा? पूज्य बनाया होगा तभी तो पूजा होती है कि ऐसे ही पूजा हो रही है?
जिज्ञासु: बनाया होगी तभी।
बाबा: तो फिर। ऐसा पुरुषार्थ किया होगा कि पूज्य बने होंगे।
जिज्ञासु: बाबा क्यों बोलते हैं कि इतना देहभान है स्त्रियों में?
बाबा: वो तो अभी बोलते हैं ना कलियुग के अंत में। जब लक्ष्मी लक्ष्मी बन जायेगी तब थोड़े ही बोला जायेगा। जब वो पूजनीय हो जायेगी।

Student: Why have they been said to be more body conscious?
Baba: If they are more body conscious then why are they worshipped? They must have made themselves worshipworthy. Would they not have? They must have made themselves worshipworthy, only then are they worshipped. Are they simply being worshipped?
Student: They must have made (themselves worshipworthy).
Baba: So then? They must have made such efforts to become worshipworthy.
Student: Why does Baba say that women are so body conscious?
Baba: That is being said now at the end of the Iron Age. It will not be said like this when Lakshmi becomes Lakshmi, when she becomes worshipworthy.

[i] The demon who received a boon fron Shankar that whoever he puts his hand on will be burnt into ashes.Finally, he burns himself into ashes.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info